CHAPTER 38

MUSIC

Doctoral Theses

01. आर्य (गरिमा)
कथक नृत्य के लखनऊ घराने के प्रवर्तक बिन्दादीन महाराज की सांगीतिक रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. ओजेश प्रताप सिंह
Th 24113

सरांश
(सत्यापित)

गीत वाद्यं च नृत्यं च त्रयं संगीत सुच्यतेश के अनुसार गायन वादन एवं नृत्य को संगीत कहा गया है। नृतय के सन्दर्भ में यदि कहें तो यह मनुष्य के आंतरिक उल्लास एवं हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति हेतु एक सहज तथा स्वाभाविक क्रिया है। अत्यन्त प्राचीन भारतीय संस्कृति के अंग के रूप में जहाँ एक ओर विभिन्न प्रकार के लोक नृतयों की धारा चलती आ रही है वहीं अनेक शास्त्रीय नृत्य विधाओं का भी प्रचार हुआ है। इन शास्त्रीय नृत्य विधाओं में उत्तर भारतीय कथक नृत्य विधा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके विकास में बिन्दादीन महाराज का नाम विशेषकर उल्लेखनीय है जिन्हें कथक नृत्य के लखनऊ घराने का प्रवर्तक माना जाता है। वह विलक्षण प्रतिभा के धनी थे तथा एक कुशल नर्तक होने के अतिरिक्त एक उत्तम रचनाकार भी थे। उन्होंने कथक नृत्य के अन्तर्गत प्रस्तुत किये जाने वाले विभिन्न शृगारिक भावों की अभिव्यक्ति हेतु अनुकूल उत्ततर सांगीतिक रचनाएँ कीं जिनका कथक नृत्य के साथ समयक् प्रयोग अत्यंत रंजकए शक्तिवर्धक तथा आकर्षक प्रभाव उत्पन्न करता है। प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्ग कथक नृत्य के ऐतिहासिक पक्ष बिन्दादीन महाराज के जीवनए व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी ठुमरीए दादराए सादराए होरीए भजन तथा झूला आदि गेय विधाओं में रचित कुछ उत्तम सांगीतिक रचनाओं का साहित्यिक एवं सांगीतिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. कथक नृत्य -एक ऐतिहासिक अवलोकन 2. कथक का लखनऊ घराना 3. बिन्दादीन महाराज का जीवन परिचय एवं व्यथ्कतत्व 4. बिन्दादीन महाराज कृत ठुमरियाँ 5. बिन्दादीन महाराज कृत अन्य सांगीतिक रचनाएँ।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

02. कृष्ण कुमार

विज्ञापनों के संगीत से आजीविका की संभावनाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन

Th 24114

सरांश

(असत्यापित)

विज्ञापन मूलतः सूचनाओं के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है। विज्ञापन शब्द के उच्चारण मात्र से ही मानस पटल पर अनेक संदेशों की छवियाँ उभरने लगती हैं। जिनका उद्देश्य हमें अनेक प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करना है। अपने विचारों को सम्प्रेषित करने के लिए मनुष्य आदिकाल से ही चित्रों, चिन्हों एवं लिपियों का सहारा लेता आया है। मानव का संदेश सम्प्रेषण का यह तरीका संदेश देने के माध्यमों के अनुसार समय के साथ-साथ क्रमशः बदलता एवं उन्नत होता आया है।वर्तमान में विज्ञापनों ने मानवीय गतिविधि के हर क्षेत्र में जनमानस को गहराई से प्रभावित किया है। आज सर्वत्र विज्ञापनों का बोलबाला है। वर्तमान युग को अग विज्ञापनिक युग कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।क्या कभी हम सोच पाए हैं कि वर्तमान में विज्ञापन इतने प्रभावशाली एवं आकर्षक क्यों हैं कि दशकों बाद भी यह हमारी स्मृतियों में बसे रहते हैं। इसका सर्वप्रमुख काण उनमें प्रयुक्त मधुर संगीत है।वर्तमान सांगीतिक विज्ञापनों का सफर 1920 से शुरु होकर वर्तमान तक पहुँचा। समय एवं परिस्थितियों के साथ जैसे-जैसे लोगों के सोचने-समझने के तौर तरीकों में बदलाव आता गया वैसे-वैसे विज्ञापनदाताओं द्वारा विज्ञापनों का स्वरूप भी बदलता गया। वर्तमान में विज्ञापन न केवल जानकारी अर्जित करने का माध्यम है बल्कि वह मनोरंजक एवं आनंददायक भी है। वर्तमान विज्ञापनों में सभी संगीत प्रकारों का प्रयोग विज्ञापनदाताओं द्वारा किया जा रहा है। इनमें शास्त्रीय, सुगम, लोक संगीत के साथ-साथ पाश्चात्य संगीत के रंग भली-भाँति बिखरे मिलते हैं जो विज्ञापन जगत को अपनी आभा से महका रहें हैं। सम्पूर्ण विज्ञापन जगत ही संगीतमय है।अतः विज्ञापन जगत में एक संगीतकार के लिए असीम सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। अनेक निर्माता निर्देशकों से भेंटवार्ता के उपरान्त मैंने ये जाना की भविष्य में सम्पूर्ण विज्ञापन जगत ही संगीतमय होगा। कोई भी ऐसा विज्ञापन नहीं होगा जिसमें संगीत प्रयोग आंशिक या पूर्णतया न हो।

विषय सूची

1. विज्ञापन 2. विज्ञापनों का संगीत 3. विज्ञापनों में प्रयुक्त संगीत का क्रियात्मक पक्ष 3. विज्ञापनों के संगीत से आजीविका की सम्भावनाएँ। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. कौशिक (स्वाति)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग ध्याान-परंपरा का विकास एवं वर्तमान संदर्भ में औचित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. अनुपम महाजन

Th 24115

सरांश

(सत्यापित)

प्रत्येक राग के दो पक्ष होते हैं-प्रथम कला के विशिष्ट शास्त्र संबंध और द्वितीय मनः कल्पित। पहले पक्ष को संगीत में नादात्मक स्वरूप और दूसरे पक्ष को राग का देवतामय स्वरूप कहते हैं।संगीत कला रागो के माध्यम से अपने अभिप्राय को व्यक्त करती है। शब्दकोशों में राग के विभिन्न अर्थ विद्यमान हैं जैसे - रंगआनंदहर्षसौन्दर्य आदि। आदर्श हिन्दी शब्दकोशएवं संस्कृत हिन्दी कोशमें दिये गए अर्थों को इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है। भारत एक आध्यात्म प्रधान देश है इसीलिए यहाँ के लोगों ने समाज के प्रत्येक पहलू को किसी न किसी रूप में आध्यात्मिक पक्ष से जोड़ने की चेष्टा अवश्य ही की है तथा संगीत भी इससे अछूता नहीं रहा। भारतीय संगीतकारों ने राग एवं रागिनियों को भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा। अतः राग के दो रूप सामने आए - नादमय एवं देवतामय। संगीत में ृध्यानश . संगीत में ध्यान दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता हैं-पहला चित्त समाहित करने की क्रिया तथा द्वितीय वह साधन जिसके द्वारा चित्त समाहित हो सके।नायक-नायिका का अर्थ एवं विशेषताएं बताने के पश्चात् नायक-नायिका के भेदों व अवस्था भेदों की चर्चा की गई है। रीतिकाल में चित्रकला प्रबल रूप से पनप रही थी श्लोकबद्ध राग ध्यान साहित्य ने चित्रकला को भी प्रभावित किया तथा राग ध्यान श्लोकों के आधार पर राग-रागिनियों के चित्र बनाए गए।राग विशेष के भाव को स्पष्ट करने के लिए समर्थ कवियों ने रागों के ध्यानों का निर्माण किया आगे चलकर इन राग ध्यानों के आधार पर उनके चित्र भी बनाए गए। इन चित्रकारों व कवियों ने अपने शब्दों व चिंत्राभिव्यंजन द्वारा रागों की आत्मा को व्यक्त किया है।अंत में उपसंहार में विषय का अवलोकन एवं नवीन संभावनाआंे की चर्चा की गई है। तदोपरांत संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

विषय सूची

1. शास्त्रीय संगीत में राग की अवधारणा 2. रागों के काल्पनिक स्वरूपों की उत्पत्ति 3. राग ध्यान परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण 4. राग ध्यान परंपरा का नायक-नायिका भेद से संबंध 5. रागों के काल्पनिक स्वरूपों द्वारा सौन्दर्यबोध एवं उनका वर्तमान संदर्भ में औचित्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. गौतम (रजनीश)

हिमाचल प्रदेश के संस्कारिक गीतों में प्रयुक्त संगत वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

Th 24275

विषय सूची

1. हिन्दी सिनेमा जगत् की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. स्वाधीनता के उपरांत हिन्दी सिनेमा संगीत का स्वरूप : कुछ प्रमुख संगीत निर्देशकों के संदर्भ में 3. स्वाधीनता के उपरांत हिन्दी सिनेमा संगीत में भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव 4. स्वाधीनता के उपरांत हिन्दी सिनेमा संगीत में भारतीय उपशास्त्रीय संगीत का प्रभाव 5. हिन्दी सिनेमा संगीत में कुछ विशिष्ट शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के कलाकारों का योगदान। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. दत्ता (अमृता)

स्वाधीनता के उपरांत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत का हिन्दी सिनेमा जगत् के संगीत पर प्रभाव।

निर्देशिका : प्रो. प्रतीक चौधुरी

Th 24316

सरांश

(सत्यापित)

3 मई सन् 1913 में भारतीय सिनेमा जगत् के जन्मदाता धुंडिराज गोविन्द फालके ने भारत की प्रथम फीचर फ़िल्म 'राजा हरिश्चन्द्र को निर्माण किया एवं बम्बई के कोरोनेशन हॉल में इस फ़िल्म का प्रदर्शन किया। 14 मार्च सन् 1931 में भारत की प्रथम सवाक् सिनेमा आलमआरा का प्रदर्शन सर्वप्रथम मुम्बई के मैजिस्टिक सिनेमा हॉल में हुआ। इस शोधकार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है- प्रथम अध्याय में सिनेमा संबंधित परिभाषाओं मनोरंजन के साथ-साथ सिनेमा के उद्देश्य मूक एवं सवाक् सिनेमा में संगीत के महत्व को लेकर लिखा गया है। द्वितीय अध्याय में पचास के दशक से लेकर समकालीन कुछ प्रमुख संगीत निर्देशकों तथा संगीत रचनाओं के विषय में लिखा गया है। कुछ प्रमुख संगीत निर्देशकों के द्वारा विभिन्न वाद्ययंत्रों के प्रयोगों के कारण हिन्दी सिनेमा संगीत में जो नवीनता आया है-इस विषय को लेकर लिखा गया है। तृतीय अध्याय में प्रमुख शैलियाँ जैसे ध्रुपद ख़्याल तराना त्रिवट चतुरंग रागमालिका के परिभाषाओं को लिखा गया है। प्रमुख गायन शैलियों का हिन्दी सिनेमा संगीत में प्रयोग को लेकर लिखा गया है। कुछ प्रमुख हिन्दी सिनेमाओं के नाम गीतों के मुखडे प्रयुक्त राग एवं ताल गायक कलाकारों के नाम एवं संगीत निर्देशकों के नामों की तालिका प्रस्तुत की गई है। कुछ प्रमुख रागों पर आधारित प्रमुख लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा गीतों के बारे में लिखा गया है। चतुर्थ अध्याय में ठुमरी दादरा होरी टप्पा कजरी चैती झूला के विषय में हिन्दी सिनेमा में प्रयुक्त ठुमरी-दादरा होरी टप्पा के विषय में हिन्दी सिनेमा में प्रयुक्त कजरी चैती झूला के विषय में लिखा गया है। पाँचवे अध्याय में शास्त्रीय संगीत जगत् के कुछ विशिष्ट कलाकारों का हिन्दी सिनेमा संगीत में

योगदान उपशास्त्रीय संगीत जगत् के कुछ विशिष्ट कलाकारों का हिन्दी सिनेमा संगीत में योगदान शास्त्रीय संगीत जगत् के कुछ विशिष्ट वादक कलाकारों का हिन्दी सिनेमा संगीत में योगदान के विषय में लिखा गया है।

विषय सूची

1. हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति 2. लोक सांस्कारिक गीतों का महत्व, उद्भव, विकास एवं संगीतात्मक विश्लेषण 3. लोक सांसकारिक गीतों का विभाजन तथा स्वर लिपियाँ 4. हिमाचल प्रदेश के लोक सांस्कृतिक वाद्य 5. हिमाचल प्रदेश के लोक सांस्कृतिक घन वाद्य 6. हिमाचल प्रदेश के अवनद्ध वाद्य । उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. श्यामा कुमार भारती
भारतीय शास्त्रीय संगीत में विकसित हारमोनियम वादन की विभिन्न शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. अनुपम महाजन
Th 24112

सरांश
(सत्यापित)

भारतीय शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम वाद्य को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शोधार्थी के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हारमोनियम के विभिन्न वादन शैलियों से संगीत समाज को अवगत कराना है। इसमें कुछ प्रमुख हारमोनियम वादकों की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके पूर्व हारमोनियम के इतिहासए संरचना एवं ट्युनिंग के बारे में जानकारी प्रदान किया गया है। सभी संगीत साधक तथा आम लोग भी हारमोनियम वाद्य से परिचित हैं लेकिन बहुत से लोगों को यह नही पता रहता है कि यह वाद्य कहाँ से आयाए इसकी ट्यूनिंग क्या होती हैए तथा इसकी प्रमुख वादन शैली क्या है इत्यादि। इस शोध कार्य के अन्तर्गत प्रारम्भ में हारमोनियम के इतिहासए भारत में इसका प्रचार-प्रसार तथा संरचना एवं ट्यूनिंग के बारे में बताया गया है। जो कि संगीत से जुड़े सभी लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। तत्पश्चात् हारमोनियम वादन के प्रमुख शैलियों को बताते हुए उनकी तुलना को मुख्य रूप से उजागर किया गया है। विभिन्न वादकों की शैली के साथ-साथ उनके जीवन परिचय का भी अध्ययन किया गया है। संगीत के उन सभी तत्वों से अवगत कराया गया है जिनके कारण से प्रत्येक वादन शैलियों में विभिन्नता आती है। जैसे- ताल लय छन्द राग गतबंदिश आलाप तानस्वरों की सफाईस्वरों में निरंतरतास्पर्श स्वरगमकमींडजोड़ झाला तथा भावपूर्ण वादकी इत्यादि। विभिन्न शैली के हारमोनियम वादकों के हारमोनियम की बनावटरीड्स तथा ट्यूनिंग का भी अन्तर होता है। इस पर सभी के अपने अलग-अलग विचार हैंइसके बारे में भी जानकारी प्रदान की गई है। इस प्रकार उनके वादन शैली को बताते हुए उनके परम्परा से जुड़े शिष्यों के बारे में भी विस्तृत रूप से बताया गया है।जिससे संगीत से जुडे सभी लोग इस शोध कार्य से लाभान्वित हो सके यही शोधार्थी का प्रयास है।

विषय सूची

1. हारमोनियम वाद्य की उत्पत्ति एवं विकास 2. शैलियों के आधार पर भारतीय हारमोनियम की संरचना एवं निर्माण प्रक्रिया 3. भारतीय शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम वादन की विभिन्न शैलियों का विकास 4. भारतीय शास्त्रीय संगीत में विकसित हारमोनियम वादन की विभिन्न शैलियाँ 5. हारमोनियम वादन की विभिन्न शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची। साक्षात्कार।

07. SHARMA (Aditi)
Comprehensive Study of the Musical Nuances Pertaining to DhrupadGayaki.
Supervisor : Prof.RajeevVerma
Th 24116

Abstract
(Not Verified)

Comprehensive Study of the Musical Nuances of Dhrupad Gayaki" aims to investigate the study of the special elements that amalgamate together in harnessing the actual style of dhrupad. Dhrupad is somehow now facing a challenge because of the social, historical reasons underwent into changes or ignored with the course of time. Being the pinnacle of the Indian classical music tradition, dhrupad has the great potential in strengthening the base of Indian classical music. It is an indispensable form that has to be encouraged at the very initial level in the ambits of classical music learning catering to all the bed rock principles pertaining to correct insight resulting in the development of highly evolved classical mind.The research work is divided into five (5) chapters:

Contents

1. Origin and development of Dhrupad 2. Musical structure of Dhrupad and its hallmark features 3. Application of Dhrupad Gayaki on instrumental music 4. Rhythmic opulence of Dhrupad 5. Growing prospects of Dhrupad Gayaki. Conclusion and bibliography.

08. शर्मा (भारत)
भारतीय संगीत में गिटार वाद्य को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख गिटार वादक कलाकारों का योगदान।
निर्देशक : प्रो. अलका नागपाल
Th 24111

सरांश
(असत्यापित)

इस शोध भारतीय संगीत में गिटार वाद्य को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख गिटार वादक कलाकारों का योगदान के माध्यम से मै उन प्रमुख कलाकारों के योगदान को प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने गिटार वाद्य को न केवल लोकप्रिय बनाया बल्कि इसे शास्त्रीय रूप में प्रस्तुत करने में भी अपनी भूमिका निभाई। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत भारतीय संगीत में वाद्यों की परम्परा को दर्शाया गया है। इस में संगीत में वाद्यों का महत्व भारतीय शास्त्रीय संगीत में वाद्यों का महत्वत था वाद्य वर्गीकरण का उल्लेख किया गया है। द्वितीय अध्याय में गिटार वाद्य का उद्गम एवं विकास के

अन्तर्गत गिटार वाद्य की ऐतिहासिक पृष्टभूमि को बताया गया है इस के बाद विश्व भर में प्रसिद्ध गिटार के मुख्य प्रकारों गिटार वाद्य की संरचना बनावट एवं वादन तकनीक की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में गिटार वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान बताते हुए भारतीय सुगम संगीत फिल्मी संगीत तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत का परिप्रेक्ष्य तथा इसके अतिरिक्त गिटार वाद्य को शास्त्रीय संगीत के अनुकूल बनाने के लिए पं॰ बृजभूषण काबरा एवं पं॰ विश्वमोहन भट्ट द्वारा किए गए परिवर्तन तथा शास्त्रीय गिटार की वादन तकनीक पर चर्चा की गई है।चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत भारतीय संगीत में गिटार वाद्य को लोकप्रिय बनाने में इसके प्रमुख कलाकारों-पं॰ गोपाल सिंह पं॰ बृजभूषण काबरा पं॰ विश्वमोहन भट्ट पं॰ देवाशीष भट्टाचार्य डा॰ वरूण कुमार पाल पं॰ सलिल भट्टडा॰ कमलाशंकर श्रीकृष्ण कुमार श्री सुनील गांगुली श्री व्हेनसिप्ले आदि के योगदान और साथ ही इन की वादन शैली को भी समझाया गया है। पाँचवे तथा अन्तिम अध्याय मं गिटार वाद्य पर कि एग एन वीन प्रयोगों विभिन्न भारतीय कलाकारों द्वारा गिटार वाद्य पर नवीन प्रयोग कर उन के द्वारा स्वःनिर्मित नवीन रूपों पर चर्चा एवं विभिन्न गिटारवादक कलाकारों एवं गिटार के कारीगरों से साक्षात्कार कर उसका उल्लेख अन्तिम अध्याय में किया गया है।

विषय सूची

1. भारतीय संगीत में वाद्यों की परम्परा 2. गिटार वाद्य का उद्गम एवं विकास 3. गिटार वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान 4. भारतीय संगीत में गिटार वाद्य को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख कलाकारों का योगदान एवं उनकी वादन शैली 5. गिटार वाद्य पर किए गए नवीन प्रयोग। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।